कलावसुधा

ISSN-2348-3660
जनवरी–मार्च, 2024
Peer Reviewed

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

संवाद–लेख प्रसंग

कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

■ वर्ष : 24 ■ अंक : 43 ■ जनवरी–मार्च, 2024

ISSN-2348-3660

Peer Reviewed

सलाहकार मण्डल

1. पद्मश्री डॉ. पुरू दाधीच
2. पद्मश्री दया प्रकाश सिन्हा
3. पद्मश्री राम दयाल शर्मा
4. पद्मश्री अजीता श्रीवास्तव
5. पद्मश्री प्रो. ऋत्विक सान्याल
6. पद्मश्री रामचन्द्र पुलावर
7. प्रो. सुरेन्द्र दुबे
8. प्रो. राधेश्याम जायसवाल
9. प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास
10. प्रो. कुमकुम धर

समीक्षा मण्डल

1. प्रो. के. शशी कुमार
2. प्रो. संगीता पण्डित
3. प्रो. राजेश शाह
4. प्रो. उषा सिन्हा
5. प्रो. अनिल बिहारी ब्योहार
6. श्रीमती मन्जरी सिन्हा
7. डॉ. दीक्षा नागर
8. शशांक दुबे
9. कुमार अनुपम
10. डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

सम्पादकीय मण्डल

1. डॉ. महेन्द्र भानावत
2. डॉ. श्याम सुन्दर दुबे
3. डॉ. चेतना ज्योतिष ब्योहार
4. प्रो. ऋचा नागर
5. डॉ. अरविन्द कुमार
6. डॉ. वीरेन्द्र निर्झर
7. भारत रत्न भार्गव
8. डॉ. गौतम चटर्जी
9. डॉ. ज़ाकिर अली 'रजनीश'
10. प्रो. डॉ. चन्द्रशेखर कणसे
11. प्रो. डॉ. बलीराम धापसे
12. प्रो. डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह कुशवाहा
13. डॉ. अपूर्वा अवस्थी

प्रधान सम्पादक	सम्पादक	सह–सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय	डॉ. उषा बनर्जी	डॉ. ज्योति सिंह

सम्पादकीय ठिकाना :

कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी,

तेलीबाग, लखनऊ – 226029

R.N.I. No. : UPHIN/2001/6035

ISSN-2348-3660

वेबसाइट : https://www.kalavasudha.com

ई–मेल : kalavasudha01@gmail.com

मो. : 8052557608 (प्रधान संपादक)

मो. : 9889835202 (संपादक)

मो. : 8009800436 (सह–संपादक)

''कला वसुधा का वेब अंक आप **Not Nul (https://www.notnul.com)** पर पढ़ सकते हैं।''

कलावसुधा
प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका
■ वर्ष : 24 ■ अंक : 43 ■ जनवरी–मार्च, 2024
Peer Reviewed ISSN-2348-3660

लेख प्रसंग

सिलसिला.....

कहना–सुनना 4

1.	कलाओं में अवतार की अवधारणा एक क्रांतिकारी चिंतन	–डॉ. चंद्रिका प्रसाद दीक्षित ललित	7
2.	भारतेन्दु के नाटकों में स्वत्व बोध	–प्रो. सुरेन्द्र दुबे	11
3.	जयशंकर प्रसाद की रंग चेतना	–आशुतोष कुमार राउत	15
4.	नाटक और कविता की अंतरंगता	–डॉ. श्याम सुन्दर दुबे	20
5.	घुमंतू बंजारा समुदाय के विविध संस्कार : साहित्य और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में	–प्रो शैलेंद्र कुमार शर्मा	23
6.	ब्रज संस्कृति के विविध आयाम	–डा. राकेश कुमार	31
7.	सिनेमा जो बनाते थे ऋत्विक घटक	–जयनारायण प्रसाद	34
8.	ब्रज–संगीत की परम्परा	–डा. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'	36
9.	रंगकर्मी–नाट्य निर्देशक शंभु मित्र जिन्होंने टैगोर के नाटकों का मंचन करके बतलाया	–ज़ाहिद ख़ान	40
10.	लोक–रंग का अनुपम चितेरा–हबीब तनवीर	–दिनेश दीक्षित	42
11.	गुलाम अली खाँ, जिन्होंने ठुमरी को एक नई पहचान दी	–जाहिद खान	45
12.	नादयोग	–डॉ. अरविन्द कुमार	48
13.	बंगाल का प्राणमय संगीत – रवींद्र संगीत	–जयश्री पुरवार	50
14.	लोक कला और सामाजिक सरोकार	–हेमन्त वर्मा	54
15.	पूंजीवाद की नींव पर सरोकार की इमारत	–शशांक दुबे	56
16.	जम्मू–कश्मीर प्रदेश के जम्मू क्षेत्र में प्रचलित डोगरी लोकगीतः एक अध्ययन	–डॉ. मुकेश कुमार	65
17.	राग–रागिनी वर्गीकरण	–डा0 सारिका श्रीवास्तव	69
18.	सत्यम् शिवम् सुन्दरम्	–कविता तिवारी	71
19.	हबीब तनवीर का रंगकर्म और उनकी रंगभाषा	–योग मिश्र	74
20.	ग्वालियर की तबला परंपरा	–पं. देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग	78
21.	मल्लिक ध्रुवपदियों का मिथिला आगमन	–लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'	86
22.	संगीत द्वारा मानसिक रोगियों के चिकित्सा एवं निदान	–अलंकृता राय	89
23.	हिल–जात्रा	–ललित सिंह पोखरिया	92
24.	राग भैरवी का प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक स्वरूप	–इन्दू ठाकुर	96
25.	भारतीय प्रेक्षागृह एवं संगीत	–डॉ0 ज्योति सिंह	99
26.	मासिक पत्रिका 'संगीत' का योगदान	–श्रीमती एकता विशाल बंसल, दिल्ली	104

27.	महाराष्ट्र की लोककला "जागरण" : एक अध्ययन	–प्रा. डा. चंद्रशेखर कणसे	107
28.	जनमानस के कवि शैलेंद्र	–अजय कुमार शर्मा	109
29.	रंगमंच : बच्चो के लिए जरूरी क्यों !	–अमरेन्द्र सहाय अमर	111
30.	भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन के घराने	–डॉ. बी. के 'चन्द्रसखी'	113
31.	बादल सरकार और रंगमंच	–सुधा गौड़	118
32.	हिंदी रंगमंच और स्त्रियों की भूमिका	–वर्षा	122
33.	मोहन राकेश के नाटकों में मध्यम वर्गीय चेतना	–नेहा मलिक	126
34.	मोहन राकेश के नाटकों में मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी	–प्रियंका कुमारी सिह	131
35.	समकालीन हिंदी रंगमंच की दशा और दर्शकों की भूमिका	–तेजस पुनिया	135
36.	आधुनिक जीवन में स्त्री अस्मिता का प्रश्न और नाटक माधवी	–प्रीति सिंह	139
47.	कोलकता के हिंदी रंगमंच में महिलाओं का अवदान	–डॉ सुफिया यास्मीन	144
38.	21वीं सदी के नाटकों में युगीन चेतना संदर्भ–मीरा कान्त कृत नाटक 'कंधे पर बैठा था शाप'	–डा. विजया सिंह	146
39.	साहित्य में स्त्रियों के बिखरते रंग–मन्नू भंडारी	–प्रियंका सिंह	149
40.	गिरीश कर्णाड के नाटक 'ययाति' में मिथक और युगीन संवेदना।	–सीमा शर्मा	151
41.	इक्कीसवी सदी के नाटकों में युगीन चेतना	–डॉ. रुकैया शाहीन	152
42.	Kaal Tattva in Chhand and Taal. Critical Analysis of Marg tattwa of Taal with Chhand	-Smrit Sheetal Talpade	154
43.	'Aesthetic realm of Abhinay Darpan in Kathak' Guru Rohini Bhate's approach towards Acharya Nandikeshwara's Abhinay Darpan - Studying and experimenting in Kathak.	–By Rujuta Soman	159
44.	On Adaptation of Plays and Its Challenges	–Zahir Anwar	170

प्रधान सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय

सम्पादक
डॉ. उषा बनर्जी

सह–सम्पादक
डॉ. ज्योति सिंह

विधि परामर्शी
रमेश चन्द्र पाण्डेय
अजीत श्रीवास्तव

आवरण चित्र
अर्चिता मिश्रा

व्यवस्था सहयोगी
देवाशीष,
पर्ण शिशिर,
ऋचा,
राहुल
रत्नेश

संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली द्वारा आंशिक आर्थिक सहयोग प्राप्त

सर्वाधिकार सुरक्षित
पत्रिका के किसी भी अंश का मंचन प्रकाशन अथवा प्रसारण करने से पूर्व सम्पादक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

पत्रिका से जुड़े सभी व्यक्ति कला सेवा हेतु अवैतनिक एवं अव्यवसायिक हैं।

न्याय क्षेत्र लखनऊ

इस अंक का मूल्य 200/–

सम्पादकीय ठिकाना : कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – 226029
वेबसाइट : www.kalavasudha.com ई–मेल : kalavasudha01@gmail.com
मो. : 8052557608, 9889835202

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक डॉ. उषा बनर्जी द्वारा शिवम् आर्ट्स 512/569, दूसरी गली, निशातगंज, लखनऊ से मुद्रित तथा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग लखनऊ – 226029 से प्रकाशित।

प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे 'कला वसुधा' और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कहना–सुनना

सहृदय एवं सुधी पाठक गण,

अभी–अभी कुछ दिनों पूर्व ही वसंत आया, होली के रंगों के अनन्त सतरंगी इंद्र धनुष, हमारे मन के आकाश में उभरे... रंगों का रस और गुलाल के विवेक में सने होली के हुरंगे अभी भी हमारे आस–पास समाज, नगर, गाँव और सभी के घर के कोनों में चल रहे हैं, होली के अनन्त रंगों से हम सभी का घर आँगन सुरंगित होकर हमारी आशाओं के पाटल पुष्प खिला रहे हैं, इसी से हमारे मन के प्रिय, प्रेम के गुलाब डोल में मस्ती की पैंगे भी मार–मार कर हमें आनन्दित कर रहे हैं....इसी आशा के साथ आप सभी को सादर, सप्रेम एवं अनन्त बधाई के साथ समुचित अभिवादन।

मन में हो वसंत तो, हर ऋतु में अनुराग के टेसू खिलें.....और प्रेम की सुरंगी बौछार के साथ, नित नवीन सुबह सबका स्वागत करे....यह सपना नहीं साधना है, रसिकों की, जिससे नित नवीन कलायें कुसुमित होती हैं, और होता है कला वसुधा का नवसुप्रभात ''कला वसुधा'' अपने प्रत्येक अंक में प्रदर्शन कलाओं के विभिन्न विषयों को केन्द्र में रख कर नित–नवीन नव सुप्रभात विखेरने का प्रयास करती है, जिसके लिये हमारे गुनी कला पिपासू लेखकजन अपने ज्ञान के उजाले से प्रकाश की अनन्त किरणें विखेरते हैं। वे अपने मन की इस कला को सभी के समक्ष रखकर एक और नवीन लक्ष्य खड़ा करते हैं, इस क्षेत्र की साधना का।

हमारे विद्वान लेखकों के लेख विद्वता से तो लवलेज होते–होते ही हैं, साथ ही उनके प्रस्तुतीकरण के शैली अपने अनुभवों को कहने, सुनने जैसी होने के कारण वे सभी लेख पढ़ने में बोझिल नहीं होते हैं। मुझे एक भी मौका उनकी किसी भी विशेषता को उजागर करने के लिये खोजना नहीं होता वे स्वयं अपने आप में सिद्ध प्रमाण से दिखते हैं। इसीलिये लेखन में संवाद शैली सर्वाधिक लोकप्रिय है फिर उसमें चाहे लेख हों, साक्षात्कार हो, या अभिव्यक्ति की अन्य विधाओं पर आधारित लेख सभी को देखकर ऐसा लगता है कि वे कुछ अपने माध्यमों से सभी को कुछ कहना या बताना चाहते है और कुछ लोगों से उनकी प्रतिक्रिया सुनना भी चाहते हैं। इसीलिये इस पत्रिका का सम्पादकीय लेख का अभिधान भी ''कहना–सुनना'' है। हम सिर्फ कोरे आदर्श और ज्ञान से बोझिल मन की बातें नहीं कहते हैं बल्कि उसे लोकग्राही बनाकर उनके कहने का अवकाश ''प्रतिक्रिया'' के ''कॉलम'' में देते हैं। इन्हीं सभी विचारों से प्रेरित होकर ''कला वसुधा'' के ये अग्रिम दो अंक संवाद पर आधारित हैं। ''संवाद प्रसंग प्रथम'' एवं ''संवाद प्रसंग द्वितीय'' अत्यधिक लेख सामग्री के आने से ऐसा सम्पादक मण्डल को करना पड़ा है। प्रथम संवाद प्रसंग में प्रायः सभी लेखकों के प्रदर्शन कला पर आधारित विभिन्न लेख संग्रहित किये गये हैं जिसमें उनकी सरल सहज और सरस लेखन यात्रा हम सभी पाठकों से संवाद करती हुई प्रतीत होती है। संवाद प्रसंग द्वितीय पूर्णरूपेण प्रदर्शन कला के क्षेत्र के सुविज्ञों के साक्षात्कार पर आधारित होगा। जिसकी आपको थोड़ी राह देखनी होगी। बस कुछ ही अन्तराल बाद वह प्रसंग भी आप सभी के समक्ष होगा। सम्भवतः यूँ सुनने में शायद कुछ नया न प्रतीत हो परन्तु अंकों की पाठ्य सामग्री आप सभी के लिये कलादित्य के आकाश से कम नहीं लगेगी। तो और क्या चाहिये हम सभी को कला के आनन्द की एक कड़ी पुनः कला–वसुधा के ''संवाद–प्रसंग– प्रथम'' के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत होने जा रही है। पाठ्य सामग्री के संदर्भ में आप सभी को लेखकों के लेख से परिचिति होना होगा उसके लिये यह अंक की विषय–वस्तु से संक्षिप्त जानकारी मिल ही जाती है। अस्तु हम प्रायः विषय सम्बन्धी अपने विचारों को अपने ज्ञान को एक लेख के रूप में किसी भी पत्रिका, पुस्तक या समाचार पत्र आदि में प्रस्तुत करते हैं। वे सभी विचार है तो हमारे और आस–पास के लोगों के ज्ञान या कौशल के संदर्भ में संवाद से ही जन्म लेते हैं। फिर चाहे मानसिक संवाद हो, बौद्धिक हो या रसोपासक रसिक के हृदय के उल्लास का परिणाम हो या सामान्य जीवन के व्यवहारिक माहौल का परिणाम। हम कला साधकों को अपने गुरुजनों, समाज या प्रकृति सभी से कला के संदर्भ में नित नवीन प्रतिभा जनित कुछ नया ही कला आवेश स्फुरित होता है और हम आधी रात में भी उठकर उसे पूरा करने में लग जाते हैं। सुबह का इंतजार भी नहीं होता है। तो कोई तो है चाहे वो गुरुजन प्रदत्त संस्कार, या कला साधना का प्रसाद या हमारे सकारात्मक विकासोन्मुखी प्रतिभा का स्पर्श जोकि अचानक ही हमें झक से सूझ जाता है जिसे शायद हम पहले कभी शायद सोचे भी नहीं, न शायद भविष्य में दुबारा फिर से वैसा चिंतन आ पाये। बस वो ईश्वर का संवाद आ गया मन में और लेखनी में या अपनी कला के माध्यम में उसे क्रमवार स्वरूप प्रदान कर उसका थोड़ा श्रृंगार कर देते हैं तो बस ये लेख या अन्य कलाकृतियाँ हमारे हृदय और बाह्य जगत के विभिन्न अनुभवों के मंथन और संवाद से ही अपना स्वरूप ग्रहण करती हैं। नहीं जानती कि इस अंक के लेखों को संवाद श्रृंखला कहना चाहिये या नहीं....। सम्भवतः मेरा ही यह चिंतन हो। इसके लिये हम सभी अपने–अपने अनुभव पर नये पक्ष परिभाषित कर सकते हैं।

एक कलाकार अपने गुरू से किसी राग के स्वरों के टुकड़ों को सुनता है और